National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 764-765

सिन्धु सभ्यता का विघटन : समीक्षा एवं अर्न्तदर्शन

आदर्श प्रताप सिंह
नेट, जे0आर0एफ0, एम0ए0–प्राचीन इतिहास, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
सिन्धु सभ्यता के उद्भव की समस्या जितनी कठिन है उसके कहीं अधिक जटिल है यह समझना की इस सभ्यता का विनाश कैसे हुआ था। सिन्धु सभ्यता के विघटन के कोई एक कारक जिम्मेदार नहीं रहे होगे वरन् यह कई कारणों की समग्र प्रभाव रहा होगा जिसमें बाढ़, सूखा, महामारी, बाह्य आक्रमण, जलवायु परिवर्तन, नदियों का मार्ग बदलना आदि प्रमुख है।

मूल शब्द: सिन्धु सभ्यता, जलवायु परिवर्तन

प्रस्तावना
सैन्धव सभ्यता का विघटन कैसे हुआ इसको लेकर विद्वानों में मतभेद है। पुरातत्ववेताओं में कोई भी एक मत नहीं है कि सिन्धु सभ्यता का विघटन कैसे हुआ। सिन्धु सभ्यता के विघटन के कारण अनेक है। इन कारणों को निम्नलिखित शीषर्कों के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन
सिन्धु सभ्यता का अन्त सम्भवत जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ। ऑरेल स्टाइन ने झालावान, काश्कोई तथा सरावसा में प्रचुर मात्रा में बांधों के निशान पाये। जो यह साबित करते हैं कि सिन्धु सभ्यता में वर्तमान समय की तुलना में काफी अधिक बारिश होती थी। मोहनजोदड़ों में खोज के बाद सर जॉन मार्शल ने बताया कि मोहनजोदड़ों में बड़े–बड़े मकान मिले हैं जेा ईंटों से बने हैं और स्वभावतः जब ईंटों को बनाया जायेगा तो उसे पकाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता हुई होगी। इसलिए वनों की कमी आयी होगी और जलवायु मे हुये परिवर्तन कारण ही सिन्धु सभ्यता का अन्त हुआ होगा इसके अलावा एक और उदाहरण राजस्थान में झीलों के तल से इकट्ठा किये गये पुरा पुष्परपराग के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि राजस्थान की जलवायु आर्द्र थी और प्रकारान्तर में सिन्धु और पंजाब में भी यहीं जलवायु रही होगी। धीरे–धीरे ईंटों के मकान की अधिकता ने जंगलों को समाप्त कर दिया और जलवायु परिवर्तन से सिन्धु सभ्यता का विनाश हो गया।
जलवायु परिवर्तन के इस मत से कई विद्वान असहमत है उन विद्वानों में आर0एल0 राइक्स और फेयर सर्विस के नाम महत्वपूर्ण है। इन्होंने कहा कि ईंटों से भवन का निर्माण एक फैशन था जिसके निर्माण में झाड़ियों एवं छोटे पेड़ों से ही काम चल सकता था। और रही बात गैडे और हाथी का अंकन तो हो सकता है कि वे उन्हें हिमालय की तराई में देखे हो अतः ये तर्क विनाश को सिद्ध नहीं कर सकता है।

प्रशासिनक शिथिलता
जॉन मार्शल और उनके सहयोगियों को मोहनजोदड़ों के उत्खनन के दौरान ऐसे तत्व मिले जिसके आधार पर उन्होंने अनुमान लगाया कि प्रशासनिक शिथलिता सिन्धु सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण थी और अपने तर्कों को सिद्ध करने के लिए उन्होंने बताया कि नये मकानों में पुराने ईंटों का प्रयोग होने लगा, सड़कों पर अतिक्रमण होने लगा, नालियां संकरी होने लगी, दीवाले कम चौड़ी होने लगी तथा मोहनजोदड़ों में कुम्हारों ने बीचो–बीच सड़क पर छः आंवे बना लिये व बस्ती का आकार सीमित हो गया और स्वच्छता की व्यवस्था समाप्त हो गयी थी।

बाढ़
सन् 1931 में जॉन मार्शल और सन् 1938 में अर्नेस्ट मैके ने मोहनजोदड़ों के पतन का प्रमुख कारण सिन्धु नदी में आयी बाढ़ी को बताया है। मार्शल द्वारा किये गये शोध में उन्हें यहाँ पर बालू के परतों के स्तर का पता चला है जिसके आधार पर बाढ़ का अनुमान लगाया है। मैके ने चन्हूदड़ों के खोज में भी बाढ़ को प्रमुख कारण माना है क्योंक वहाँ भी बालू की परतें मिली हैं। चन्हूदड़ों एवं मोहनजोदड़ों में ऊंचाई पर बने मकान इसी बात की पुष्टि करते हैं कि बाढ़ से बचने के लिए इनका निर्माण किया गया होगा। गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित पुरालेखों से भी बाढ़ के निशान मिले हैं।
यदि बाढ़ को एक कारण मान लिया जाए की बाढ़ की वजह से ही मोहनजोदड़ों, चान्हूदड़ों और लोथल बाढ़ से विनष्ट हो गये तो भी इस सभ्यता के अनेक पुरास्थलों के विषय में यह कारण लागू नहीं होता है। तो वे स्थल क्यों नष्ट हो गये। बाढ़ को एक दो नगरों के विनाश का तो कारण तो माना जा सकता है परन्तु सम्पूर्ण सभ्यता की नहीं यह बात आसानी से समझ नहीं आती है।

विदेश व्यापार में गतिरोध
सैन्धव सभ्यता के विनाश का अन्य कारण विदेश व्यापार में कमी को माना जाता है। सैन्धव सभ्यता का व्यापारिक सम्बन्ध पश्चिमी एशिया के क्षेत्रों से था व्यापार में कमी के कारण सैन्धव सभ्यता में ठहराव आ गया और सिन्धु सभ्यता नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में परिवर्तित हो गयी। और कालान्तर में नष्ट हो गयी।
सामान्यतः व्यापार में ह्रास होने पर व्यापारी नये मार्गों का खोज करते हैं और आवश्यकता की पूर्ति अन्य तरीके से भी करते हैं परन्तु सभ्यता का विनष्ट हो जाना अतिश्योक्ति सा लगता है।

भूतात्विक परिवर्तन
एम0आर0 साहनी, आर0एल0 राइक्स आदि ने सैंधव सभ्यता के

विघटन के लिए भूतावित्क परिवर्तनों को उत्तरदायी बतलाया है। राइक्स ने विभिन्न स्थलों के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि विवर्तनिक उथल–पुथल के कारण अरब सागर के उत्तरी छोर के आस–पास की जमीन पर उभार आ गया और नदियों के मुहाने प्रभावित हुए और विभिन्न झीलों का निर्माण हो गया नदियों में सिल्ट जम गयी जिससे बाढ़ और जल उत्पलावन की समस्या आयी जो सिन्धु सभ्यता के विनाश का एक कारण बना।

नदियों के मार्ग परिवर्तन से कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे की स्थिति उत्पन्न हो गयी और जमीन बंजर हो गयी जो सिन्धु सभ्यता के विनाश का कारण बनी। परन्तु यह मत एकांगी प्रतीत हो रहा है क्योंकि जो सिन्धु निवासी इतनी महान सभ्यता का विकास कर सकते हैं वे सिन्धु नहीं में आयी बाढ़ को सम्भाल नहीं पाये, उचित प्रतीत नहीं होता है।

वाह्य आक्रमण

बाह्य आक्रमण को भी सैन्धव सभ्यता के विघटन का एक कारण माना गया है। गार्डन चाइल्ड एवं स्टुअर्ट पिग्गट ने बताया कि हड़प्पा के टीले पर सैंधव सभ्यता के अवशेष चिन्ह भी प्राप्त हुए हैं। कालान्तर में माधोस्वरुप वत्स ने समाधि (H) की खोज की। समाधि (H) के दो स्तर है निचले स्तर के समाधि में शवों को समुचित तरीके से कब्र में लिटाया गया है वहीं दूसरे स्तर में 140 लाशें अस्त व्यस्त मिली है। जिनमें से एक दर्जन कंकाल बच्चों के प्रतीत होते हैं ऐसा मालूम होता है कि किसी बहारी आक्रमणकारी के द्वारा आक्रमण कर इन लोगों की हत्या कर दी गयी है। गार्डन चाइल्ड ने यह माना है कि इन समाधियों के निर्माता आर्य कबीले के हैं जिन्होने सैन्धव सभ्यता का विनाश किया है।

ह्वीलर के अनुसार यद्यपि द्वितीय सहस्त्राब्दी ई0पू0 के मध्य तक सैन्धव सभ्यता विद्यमान थी तथा अपने पतन की ओर अग्रसर हो रही थी और आर्यों का आकस्मिक आक्रमण ने इस सभ्यता का निर्णायक अन्त कर दिया। ऋग्वेद के सूत्र में असुरों के 'अयस' निर्मित पुरों के 'पुरन्दर' इन्द्र द्वारा विनष्ट किये जाने का उल्लेख मिलता है और हमें सैन्धव सभ्यता के अलावा और कहीं भी दुर्ग होने की जानकारी नहीं मिलती है अतः ह्वीलर ने इस संहार के लिए इन्द्र को दोषी ठहराया है।

बाह्या आक्रमण के प्रश्न पर विद्वानों में मतभेद है। सैन्धव सभ्यता के अन्त के क्रम में काफी समय अन्तराल है अतः सिर्फ वाह्य आक्रमण इतने गौरवशाली सभ्यता के अन्त का कारण कैसे बन सकती है।

महामारी

हड़प्पा, चान्हूदडों, लोथल, कालीबंगा, रोपड़ आदि में नगर क्षेत्र के बाहर स्थित कब्रगाहों से कंकाल मिले है। मोहनजोदड़ों से अभी तक 42 नर कंकाल अस्त व्यस्त सड़कों पर यत्र तत्र पड़े मिले हैं। इन नर कंकालों के अध्ययन के फलस्वरूप यह पता चलता है कि किसी एक की मृत्यु चोट लगने से हुयी है अन्य की मृत्यु महामारी जैसे किसी रोग के कारण हुई है, अगर इनकी हत्या हुई होती तो इनके शरीर पर घाव के निशान होते।

उपरोक्त मतों की समीक्षा के उपरान्त यह पता चलता है कि सिन्धु सभ्यता के विघटन का प्रश्न अत्यन्त जटिल है। पुरातात्विक शोधों के अनुसार लगभग 2300–1750 के मध्य इस सभ्यता का काल ठहरता है। इतनी विस्तत एवं दीर्घ जीवी सभ्यता का विनाश किसी एक कारण हुआ होगा यह समझना नितान्त नादानी भरा है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस सभ्यता के विनाश के कई कारण रहें होगें और यह एक दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम है।

संदर्भ

1. Agrawal DP. The Archacology of India London 1982. The Copper-Bronze age in India, Delhi. 1972.
2. Dani AH. Indus civilzation: New perspective, Department of Archaeology, Karachi. 1981.
3. Dhavalikar MK. Cutural imperialism: Indus civilization in western India Books and Books.
4. Gaur RC. Excavations at Atranjikeres
5. Ghosh NC. Archacological survey of India, New Delhi, 1986.
6. Jansen M. Mohanjo daro: City of wells and drains
7. Jayasawal, Vidula. Palaeohistory of India, Delhi
8. Lal BB. Indian archaeology since independence
9. Lal BB, Gupta SP. Frontiers of Indus civilzation
10. Marshall Mohanjodaro J. and the Indus valley civilization
11. Thapar Romila. Ancient Indian Social history
12. Sharma, Ram Sharma. Ancient India
13. JHA and Shree mail. History of Ancient India